12
नये नियम की कलीसिया

इस संसार में रहने के लिए निर्णय लेना आवश्यक है। हमारे अधिकतर निर्णय छोटे, क्षणिक और कुछ-कुछ निरर्थक होते हैं। अन्य निर्णय इतने विवेचनात्मक ढंग से महत्वपूर्ण होते हैं कि वे इस जीवन में परमेश्वर के सामने हमारे जीने के ढंग को प्रभावित करते हैं और उनसे ही हमारा अनन्त निवास तय होगा। ये निर्णय, जिनसे जीवन और अनन्तकाल प्रभावित होता है, लेने से पूर्व इन पर गज़ीरतापूर्वक विचार और प्रार्थनापूर्वक खोज होनी चाहिए। नये नियम की कलीसिया में प्रवेश के निर्णय पर ध्यान देने से अधिक और महत्वपूर्ण निर्णय कोई नहीं हो सकता। इस प्रश्न के सज़्बन्ध में जो भी निर्णय हम लेंगे, उससे परमेश्वर के लिए हमारा दैनिक जीवन, हमारी आत्मिक पहचान, हमारी आराधना और हमारी आत्मिक सेवा प्रभावित होती है। फिर तो, पवित्र बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के अनुसार इस प्रश्न का उत्तर मिलने तक बिना किसी पूर्वधारणा और तर्क के हमें इस पर विचार करना चाहिए।

हमारा संसार विभिन्न कलीसियाओं से भरा पड़ा है, जो हमारी वचनबद्धता और निष्ठा के लिए निवेदन करती हैं। निर्णय तो लेना ही पड़ेगा। नये नियम की कलीसिया कौन सी है? हम यह फैसला कैसे करें? स्पष्ट है कि प्रमाण के बारे में सावधानीपूर्वक सोचने और सही पसन्द चुनने अर्थात वह पसन्द जो परमेश्वर को भाती है, के लिए हमें सहजबुद्धि के मार्गदर्शन की कुछ खास बातें माननी आवश्यक हैं। यदि हम इन खास बातों का सत्यनिष्ठा से पालन करें तो हम संसार में आज नये नियम की कलीसिया को पहचान सकते हैं।

मार्गदर्शन की ये कुछ खास बातें क्या हैं?

पहली सदी में कलीसिया को कैसे पहचाना जाता था?

नये नियम में कलीसिया का पहला दृश्य प्रेरितों के काम 2 के अन्तिम भाग में मिलता है। सुसमाचार कलीसिया के बारे में यीशु और उसके प्रेरितों के द्वारा की गई भविष्यवाणियों को दर्ज करके हमारे अन्दर इसके चित्र की अपेक्षा और पूर्वाभास कराते हैं (मत्ती 16:18; मरकुस 9:11; प्रेरितों के काम 1:4-8)। फिर, प्रेरितों के काम 2 में कलीसिया की स्थापना होते ही, पवित्र आत्मा के द्वारा कलीसिया का सजीव चित्र हमारे सामने रखा गया है।

कलीसिया का यह चित्र हमें इसके विशेष गुणों को देखने में सहायता करता है। अब हमें आश्चर्य नहीं रहा कि जो कलीसिया यीशु ने स्थापित की, वह वास्तविक जीवन में कैसी दिखती है।

लूका के द्वारा प्रेरितों 2 में दी गई तस्वीर में कलीसिया के मुज़्य गुणों की सावधानी से समीक्षा करें:

> वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।
>
> सब लोगों पर भय छा गया और बहुत से अद्भुत काम और चिह्न प्रेरितों के द्वारा प्रकट होते थे। और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थी। और वे सज़त्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे। और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था (प्रेरितों के काम 2:42-47)।

इस तस्वीर में हमें कलीसिया के क्या गुण मिलते हैं?

वचनबद्धता में दृढ़

पहला गुण प्रेरितों की शिक्षा से लगातार जुड़े रहना है। लूका ने कहा, ''वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे''

(प्रेरितों के काम 2:42)।

प्रेरितों की शिक्षा के प्रति कलीसिया की वचनबद्धता अपने आप ही उसकी शिक्षा को; मिलकर आराधना करने, सेवा करने और चन्दा देने; प्रभु-भोज अर्थात ''रोटी तोड़ने''[1] में और प्रार्थना में देखा जा सकता है। मसीह उनका सिर था और वे उसकी कलीसिया में उसके नेतृत्व को, उसके वचन को सम्मान देकर जो उन्हें प्रेरितों के द्वारा मिला था, मानते थे।

हमें चाहिए कि उसकी कलीसिया में मसीह के पीछे चलने की सादगी को मसीही जगत के मतभेदों के रूप में उलझन में डालने की अनुमति न दें। कलीसिया कोई मनुष्य की बनाई हुई देह नहीं है। यह उन लोगों का समूह है जिन्होंने पवित्र आत्मा के संदेश को मान लिया है और इस तरह सुसमाचार की आज्ञा मानने से, पवित्र आत्मा द्वारा मसीह की कलीसिया में मिलाए गए हैं। वे केवल मसीह के हैं। वे किसी मनुष्य के नेतृत्व में नहीं बल्कि देह के सिर अर्थात मसीह की अगुआई में उसके प्रकट वचन द्वारा चलते हैं। वे मसीह के प्रति वफ़ादारी, उसके आत्मिक वचन को मानने में देखते हैं। संसार में बाइबल यीशु के हाथ के रूप में मसीहियों की आराधना, उनके काम और प्रतिदिन के जीवन में मसीह के लिए जीने में मार्गदर्शन करती है।

पवित्र आत्मा के द्वारा बनाई गई कलीसिया की तस्वीर को देखने पर, हमें वचनबद्धता में दृढ़ता का गुण मिलता है।

तरस में नि:स्वार्थ

कलीसिया की इस आत्मिक तस्वीर में एक और गुण जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते, वह है कलीसिया का एक दूसरे के प्रति नि:स्वार्थ तरस। सच्चाई के प्रति उनकी सच्चे मन से आज्ञाकारिता ने उनमें एक दूसरे के प्रति तरस भरा प्रेम पैदा किया। लूका ने कहा, ''और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों के काम 2:45)।

यहूदी लोग पिन्तेकुस्त का दिन मनाने के लिए सारे रोमी साम्राज्य से आए हुए थे। उन्होंने सोचा होगा कि यह पिन्तेकुस्त भी सामान्य की तरह ही होगा; परन्तु उन्हें अति आश्चर्य हुआ, यह तो सामान्य नहीं था। यह वह ऐतिहासिक दिन था, जिसकी राह भविष्यवक्ता देख रहे थे। पतरस के सन्देश को सुनने के बाद बहुत से यहूदी लोग मसीही बन गए (प्रेरितों के काम 2:41)। उनके लिए मसीह की आज्ञा मानने का अर्थ एक क्रान्तिकारी परिवर्तन था। एक बात यह कि उनके लिए यरूशलेम में रहना और

प्रेरितों से कलीसिया, जिसके वे अंग बन चुके थे, के बारे में और शिक्षा पाना आवश्यक था। उनमें से कइयों के लिए यरूशलेम में रुकने का अकस्मात निर्णय लेना कठिन था क्योंकि वहां ठहरने की उनकी कोई अग्रिम योजना नहीं थी। कोई शक नहीं कि वहां उन्हें घर और भोजन की आवश्यकता होगी। अन्य मसीही, जिन्हें ऐसी कोई समस्या नहीं थी, उन्होंने दूर-दूर के स्थानों से आए अपने भाइयों तथा बहनों की कठिनाई में उनके लिए क्या किया? जो कुछ उन्होंने किया वह तरस और प्रेम की तस्वीर है, जिसकी बराबरी शायद ही कोई और कर सकता हो। कइयों ने अपने इन भाइयों की देखभाल के लिए अपने घर और ज़मीन तक बेच दिए। उनके ये काम तरस के गुण को चित्रित करते हैं, जो मसीह ने चाहा था कि उसकी कलीसिया में हमेशा हों।

एक सच्चाई जो उनके बांटने को बयान से परे खूबसूरत बना देती है, वह यह है कि दान पूरी तरह से स्वैच्छिक थे। उनका दान उनसे ज़बरदस्ती या प्रेरितों की आज्ञा से नहीं लिया गया था (प्रेरितों के काम 5:4), यह तरस भरे दिलों और मसीह समान प्रेम से निकला था। मसीह ने उनमें नि:स्वार्थ सहानुभूति का एक नया स्वभाव पैदा कर दिया था।

उनका दान केवल देना या बांटना ही नहीं था कि सभी बराबर हो जाएं या सब के पास एक-समान हो। यह कोई साम्प्रदायिक जीवन नहीं था; यह तो परवाह करने वाला प्रेम था। उन्होंने ज़रूरतमन्दों को दिया। उन्होंने जहां आवश्यकता थी वहां दिया; वे जानते थे कि *प्रत्येक आकस्मिक संकट में सहायता पहुंचानी आवश्यक है।* लोगों की आवश्यकताएं बढ़ने पर, और लोगों ने उन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रेम के कारण काम किया चाहे इसके लिए उन्हें कोई बलिदान भी देना पड़े!

लूका ने कलीसिया के बारे में कहा, ''और उनमें कोई भी दरिद्र न था; क्योंकि जिन के पास भूमि या घर थे, वे उन को बेच कर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे। और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे'' (प्रेरितों के काम 4:34, 35)। उसने यह भी कहा, ''यहां तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति को अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था'' (प्रेरितों के काम 4:32ख)।

तरस मसीह की कलीसिया का आधारभूत गुण है। जहां मसीह के वचन के प्रति सच्ची आज्ञाकारिता नहीं, वहां पर कलीसिया स्थिर नहीं रह सकती। कलीसिया तब भी नहीं रह सकती है यदि वह मसीह के अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ तरस से भरी न हो। सच्चे मसीहियों में भाईचारे का प्रेम होता है जो उनके मनों में परमेश्वर के प्रेम के

बसने से आता है। यूहन्ना ने लिखा, ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)।

आत्मा द्वारा दिखाई गई कलीसिया की पहली तस्वीर में, नि:स्वार्थ तरस स्पष्टतया एक महत्वपूर्ण गुण है।

मसीह में संगठित

मसीह की कलीसिया की तस्वीर में तीसरी विशेषता इसकी एकता है। पवित्र आत्मा ने, इन लोगों को सुसमाचार और प्रेरितों की शिक्षा मानने के कारण, मसीह की कलीसिया के सदस्यों को मन की एकता दी थी। लूका ने कहा, ''और वे सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं'' (प्रेरितों के काम 2:44), उसने आगे कहा, ''वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे'' (प्रेरितों के काम 2:46)।

जिस कलीसिया को यीशु ने बनाया, उसकी मधुर एकता को देखते हुए, आइए अपने आपको कलीसिया की इस पहली तस्वीर का महत्व याद दिलाएं। यह तस्वीर पृथ्वी पर मसीह के जीवन और मृत्यु का परिणाम देती है। यीशु जिस प्रकार की कलीसिया की स्थापना या रचना करने आया, क्या यह बहुत बड़ा संगठन है जिसकी कई संस्थाएं हैं, जिनके अलग-अलग नाम हैं, जिनके अलग-अलग धर्मसार हैं, और उनकी आपस में एक दूसरे से कोई संगति नहीं है? या क्या उसने एक संगठित देह बनाई जिस पर वह सिर बनकर शासन करता है? शायद पूरे नये नियम में प्रेरितों के काम 2 अध्याय में कलीसिया की वह स्पष्ट तस्वीर मिलती है जो मसीह चाहता है कि उसकी कलीसिया की हो और यह कि इस संसार में उसका जीवन कैसा हो। यह तस्वीर स्पष्ट प्रकट करती है कि उस कलीसिया की विशेषता मन और जीवन की एकता थी। मसीह अपनी कलीसिया को आज भी ऐसा ही चाहता है। यह फूट जो आज सारे धार्मिक जगत में है इस बात का पक्का चिह्न है कि मनुष्य ने अपनी सांसारिक बुद्धि से, मसीह की कलीसिया को छोड़ दिया है और अपनी कलीसियाएं बना ली हैं।

प्रभु की कलीसिया की एकता को शादी में चित्रित किया जा सकता है। शादी में पुरुष और स्त्री एक हो जाते हैं (इफिसियों 5:31)। शादी समारोह के बाद एक नया

परिवार बनता है। अब वे एक दूसरे के हैं, और उनका स्वभाव बदल जाता है। स्वार्थी महत्वाकांक्षाएं और व्यक्तिगत उद्देश्य मर जाते हैं; इस नए परिवार की भलाई के लिए नई महत्वाकांक्षाओं और उद्देश्यों को जन्म मिलता है। वे इकट्ठे रहते हैं, एक दिल और जान, अपने घर की शांति, प्रेम और भविष्य के लिए काम करते हुए। उनमें यह एकता कैसे आई? यह एकता उन्हें विवाह में बन्धने की आपसी सहमति और शादी के नियम को पूरा करने से मिली। वे इस एकता को कैसे बनाए रखते हैं? वे उसे एक दूसरे को क्षमा करके, शादी के अपने करारों का सम्मान, और शादी की मुबारक स्थिति का सम्मान करके इसे बनाए रखते हैं।

क्या यह बात कलीसिया के लिए सत्य नहीं है? हम कलीसिया की एकता में कैसे प्रवेश करते हैं? निजी सहमति से, हम अपने जीवन को मसीह के सुसमाचार के आगे समर्पित करके उसकी देह, अर्थात कलीसिया में प्रवेश करने का फैसला करते हैं। उस देह में शामिल होने पर, हम पवित्र आत्मा द्वारा मसीह और उसके हर एक अंग के साथ एक हो जाते हैं। एक दिल और जान से, हम प्यार करना, सेवा करना, और उसकी देह बनकर जीना आरम्भ कर देते हैं। हम इस एकता को कैसे बनाए रखते हैं? हम एक दूसरे से प्रेम करने, क्षमा करने, आराधना, सेवा और प्रतिदिन के जीवन में मसीह के वचन का सम्मान करके इसे बनाए रखते हैं।

मसीह की कलीसिया की निर्विवाद विशेषता एकता है। मसीह की कलीसिया वहां अस्तित्व में नहीं रह सकती जहां पर फूट हो। देह में प्रवेश करने पर यह एकता हमें पवित्र आत्मा की ओर से मिलती है; और देह के रूप में जीते हुए हम इसे स्थिर रखते हैं अथवा इसे हानि पहुंचाते हैं। मसीह की देह में फूट का विचार कभी भी एक मसीही के मन में नहीं आना चाहिए। पवित्र आत्मा की इस तस्वीर के अनुसार, इस संसार में वह स्थान जहां एकता मिलती है, मसीह की देह है।

आज कलीसिया को कैसे पहचाना जा सकता है?

इसके आर भ पर ध्यान दें

नये नियम की कलीसिया को पहचानने के लिए मिलने वाले चिह्नों में से एक इसके आरम्भ होने का समय है। कोई भी कलीसिया, जो नये नियम के समय से पहले या बाद में आरम्भ हुई स्पष्टत: वह नये नियम की कलीसिया नहीं हो सकती है।

अपनी व्यक्तिगत सेवकाई के तीन चौथाई मार्ग में, यीशु ने वायदा किया, ''मैं ... अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। उसने अपने जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त पर अपना यह वायदा पूरा किया (प्रेरितों के काम 2:41-47)। पिन्तेकुस्त के इस दिन के बाद से, नये नियम के शेष भाग में कलीसिया को दिखाया गया है कि इसका अस्तित्व था (प्रेरितों के काम 5:11; 7:38; 8:1, 3)।

मान लीजिए कोई कहता है, ''मेरी कलीसिया पुराने नियम में आरम्भ हुई।'' उसकी कलीसिया बहुत पहले बन गई। पुराना नियम राज्य के आने की भविष्यवाणी करता है, परन्तु इसमें इसके स्थापित होने की बात नहीं बताई गई। मान लीजिए कोई कहता है, ''मेरी कलीसिया तीसरी सदी से आरम्भ हुई।'' तो उसकी कलीसिया बहुत बाद में बनी। यह नये नियम की कलीसिया नहीं हो सकती। नया नियम कलीसिया की स्थापना के लिए भविष्य की ओर नहीं देख रहा था बल्कि, कलीसिया के पूरे संसार में ज़ोरदार फैलाव के द्वारा रोमी साम्राज्य को हिलाकर यह पूरा हो जाता है।

सामान्यत: प्रोटैस्टैंट कलीसिया सोलहवीं सदी के समय, सुधार के दौरान या बाद में, अस्तित्व में आई। नये नियम में किसी भी प्रकारके किसी भी सम्प्रदाय (डिनोमिनेशन) का नाम नहीं मिलता। नये नियम की कलीसिया की स्थापना हुई, और फिर सदियों बाद नये नियम की पद्धति से धर्म त्याग के आरम्भ होने से, डिनोमिनेशनें अस्तित्व में आई। जो तस्वीर नये नियम में है, वह किसी भी सम्प्रदाय (डिनोमिनेशन) के अस्तित्व में आने से पहले लोगों के मसीही बनने, और मसीह की देह के रूप में जीने और आराधना करने की है।

किसी विशेष कलीसिया को ध्यान में रखकर पूछें, ''इसका आरम्भ वास्तव में कब हुआ?'' यदि इसके आरम्भ होने का समय हमारे प्रभु के जी उठने के बाद आने वाले पहले पिन्तेकुस्त के अलावा कोई और है तो, यह नये नियम की कलीसिया नहीं हो सकती।

इसके उद्देश्य पर ध्यान दें

नये नियम की कलीसिया की पहचान के लिए इसकी एक और विशेषता इसका उद्देश्य है। नये नियम की कलीसिया का उद्देश्य केवल इसका नये नियम की कलीसिया बनना है। यह इससे मिलती-जुलती, इसके सदृश, या लगभग यही नहीं बनना चाहती। इसका संकल्प यही बनना है।

इस प्रश्न पर ध्यान करते हुए कि ''नये नियम की कलीसिया कौन सी है?'' आप

किसी विशेष कलीसिया के बारे में पूछ सकते हैं, ''इसका इस संसार में उद्देश्य क्या है ?'' नये नियम की कलीसिया इस संसार में मसीह की देह थी। पौलुस ने कहा, ''वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (रोमियों 12:5)। कोई कलीसिया जो अपने समाज में मसीह की देह बनना नहीं चाहती, वह नये नियम की कलीसिया नहीं हो सकती।

मसीह ने लोगों को एक सञ्जदाय बनकर, उसके चेले बनने के लिए नहीं बुलाया। उसने उन्हें संसार में उसकी देह बनकर चेले होने के लिए बुलाया। यह देह उसका नाम पहने, उसके नाम में आराधना के लिए इकट्ठी हो और उसकी महिमा के लिए संसार में काम करे।

इसके कार्यों पर ध्यान दें

नये नियम की कलीसिया की पहचान के लिए अभी एक और चिह्न है, उसके कार्य। यह कहना अलग बात है कि कोई कलीसिया नये नियम की है परन्तु उस कलीसिया को उसके कार्यों द्वारा प्रमाणित करना बिल्कुल ही अलग। कोई भी नये नियम की कलीसिया होने का दावा कर सकता है, परन्तु उस दावे का प्रमाण हमेशा उसके कार्य ही हैं।

नये नियम की कलीसिया की रीतियों को आसानी से नये नियम में देखा जा सकता है। नये नियम की कलीसिया हर सप्ताह के पहले दिन आराधना के लिए इकट्ठी होती थी और प्रभु की मृत्यु के स्मरण के लिए रोटी तोड़ती थी (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:20; इब्रानियों 10:25)। मसीही लोग मिलकर अपने मनों में प्रभु का स्तुतिगान करते और एक दूसरे को चिताते थे। नये नियम में उसकी आराधना में वाद्य-संगीत के प्रयोग का कोई संकेत नहीं है, और न ही यह ऐसा करने की आज्ञा देता है (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। परमेश्वर के काम को आगे ले जाने और निर्धनों की सहायता के लिए वे अपनी आमदनी के अनुसार हर सप्ताह के पहले दिन चंदा देते (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) थे। वे इकट्ठे प्रार्थना करते और आत्मा की प्रेरणा पाए मनुष्यों पर प्रकट परमेश्वर की इच्छा पर ध्यान देते (प्रेरितों के काम 2:42) थे (देखिए पृष्ठ 221 से 224)। आराधना में मूर्तियों की पूजा करना और मोमबत्तियों या धूप का प्रयोग करना अधिकृत नहीं है और न ही नये नियम की कलीसिया की रीतियों का भाग है। नये नियम की कलीसिया की प्रत्येक मण्डली अध्यक्षों या प्राचीनों के द्वारा ही (1 तीमुथियुस 3:1-7), यीशु को कलीसिया का एकमात्र सिर जानकर चलाई

जाती है। सेवक (1 तीमुथियुस 3:8-11) और सुसमाचार प्रचारक (2 तीमुथियुस 4:1, 2) प्राचीनों की निगरानी में कलीसिया की सेवा करते थे।

नये नियम की कलीसिया की पहचान के लिए, हमें नये नियम की कलीसिया की विशेष रीतियों की एक सूची बना लेनी चाहिए और फिर उस सूची की तुलना अपने आस-पास पाई जाने वाली कलीसियाओं से करनी चाहिए। जब हमें वह कलीसिया मिल जाए जो नये नियम में दिए नमूने का अनुसरण करती है, तो हमें मान लेना चाहिए कि हमने नये नियम की कलीसिया अर्थात प्रभु की कलीसिया को पा लिया।

इसके पदनामों पर ध्यान दें

नये नियम की कलीसिया की पहचान के चिह्न में इसके पदनाम हैं। बाइबल में नये नियम की कलीसिया के लिए प्रयुक्त वर्णनात्मक वाक्यांश इसे सम्प्रदायों (डिनोमिनेशनों) से अलग करते हैं।

नये नियम में कलीसिया को ''मसीह की देह'' (इफिसियों 4:12), ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2), ''मसीह की कलीसियाएं'' (रोमियों 16:16), ''पहिलौठों की ... कलीसिया'' (इब्रानियों 12:23), ''स्वर्ग का राज्य'' (मत्ती 16:19), और केवल ''कलीसिया'' (इफिसियों 1:22) कहकर सम्बोधित किया गया है। ये वाक्यांश कलीसिया के स्वभाव और पहचान का वर्णन करते हैं। नामों से बढ़कर ये इसकी परिभाषा हैं।

क्या हो यदि आप किसी कलीसिया के बारे में विचार कर रहे हों जिसे ऐसे वाक्यांश या नाम से जाना जाता है, जो नये नियम में नहीं मिलता? यकीनन ही हमें मान लेना चाहिए कि यह अस्वीकार्य है। पहला, यदि कलीसिया नये नियम की है, तो यह अपने लिए नये नियम से अपरिचित नाम का उपयोग क्यों करती है? दूसरा, यदि यह नये नियम की कलीसिया है, तो यह कलीसिया के लिए नये नियम के वाक्यांश का उपयोग क्यों नहीं करती जिससे यह पता चले कि यह नये नियम की कलीसिया है? तीसरा, यह सम्भव है कि नये नियम की कलीसिया बिना सोचे ही नाम के लिए नये नियम से बाहर का वाक्यांश प्रयोग करे। यकीनन ही, जब यह उनके ध्यान में लाया जाए, तो वे प्रसन्नतापूर्वक उसे नये नियम के नामों में बदल देंगे ताकि कोई उन्हें नये नियम से बाहर के न माने।

यदि कोई कलीसिया नये नियम की बनना चाहती है, नये नियम की कलीसिया के गुण अपना लेती है, और हर एक को दिखाना चाहती है कि यह नये नियम की

कलीसिया है, तो इसे अपने ऊपर नये नियम में कलीसिया के लिए दिए नामों को लागू करना चाहिए। केवल उन्हीं नामों को।

सारांश

पवित्र आत्मा ने, जो नये नियम की कलीसिया की तस्वीर दिखाई है, उससे तीन प्रभावशाली गुण प्रकट होते हैं जो मसीह की कलीसिया को अन्य धार्मिक सगंठनों से सदा के लिए अलग करते हैं। पहले, उसकी कलीसिया उन लोगों का एक समूह है जो उसके वचन के आज्ञाकारी हैं और लगातार उसके आत्मिक वचन में बने रहते हैं। दूसरा, उसकी कलीसिया में दूसरों के लिए तरस है, जो कलीसिया के ज़रूरतमन्द सदस्यों को भौतिक वस्तुओं और भण्डारों से भी अधिक महत्व देती है। तीसरा, हर एक व्यक्ति जो सुसमाचार के द्वारा मसीह की कलीसिया में शामिल होता है, उसे पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह और अन्य सभी सदस्यों के साथ एक बनाया जाता है और अपने प्रेम और मसीह के वचन से जुड़े रहकर वह एकता को बनाए रखता है। कलीसिया को एक परिवार के रूप में एक दिल और जान से चित्रित किया गया है!

फिर आज हम मसीह की कलीसिया कैसे बन सकते हैं? दो शब्द इसका ढंग समझाते हैं: ''अनुसरण करना'' और ''समर्पित होना'', आइए मसीह का अनुयायी बनने के लिए इस पाठ में मिलने वालों का अनुसरण करें। जब पतरस ने मसीह के वचन का प्रचार किया तो इन लोगों ने सुना और पुकार उठे, ''हम क्या करें?'' पतरस ने उन्हें बताया, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले ...'' (प्रेरितों के काम 2:38)। विश्वास से जो वचन के द्वारा उनमें बोया गया था, उन्होंने मन फिराया और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लिया, और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लिया। लोगों को अपना बनाने का मसीह का यही ढंग है। आज जब कोई इस ढंग को अपनाता है, तो मसीह उसके लिए वही करेगा जो उसने उनके लिए किया। वह हममें से हर एक को वैसे ही प्रेम करता है जैसे उसने उनसे किया; वह हमारे लिए वैसे ही मरा जैसे उनके लिए।

आइए मसीह के वचन की आज्ञा मानें और अपने आपको उसकी कलीसिया बन जाने के लिए समर्पित कर दें। प्रेरितों के काम 2 अध्याय की तस्वीर के अनुसार, ऐसा मसीह के वचन को थामे रखकर, मसीह के साथ चलकर जीवन व्यतीत करते हुए और

उस एकता को बनाकर कर सकते हैं जो पवित्र आत्मा ने मसीह में उसकी कलीसिया को दी है।

अब जब हम जानते हैं कि मसीह की कलीसिया कैसी दिखती है, तो आइए हम मसीह की कलीसिया बनने का निर्णय लें।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 239 पर)

1. वाक्यांश ''प्रेरितों से शिक्षा पाने में ... लौलीन रहे'' (प्रेरितों के काम 2:42) के अर्थ पर विचार करें। आज हमारे लिए इस वाक्यांश का क्या अर्थ है?
2. उस एकता के नमूने का वर्णन करें जो यरूशलेम की कलीसिया में थी।
3. आज मसीह की कलीसिया को कैसा नज़र आना चाहिए?
4. यह फैसला करना कि नये नियम की कलीसिया कौन सी है, दूरगामी निर्णय क्यों है?
5. बाइबल की उन आयतों की सूची बनाएं जिनसे पता चलता है कि नये नियम की कलीसिया प्रेरितों के काम 2 अध्याय में पिन्तेकुस्त के दिन आरम्भ हुई।
6. सम्प्रदायों (डिनोमिनेशनों) का आरम्भ कब हुआ?
7. मसीह की देह किन से बनती है – व्यक्तिगत मसीहियों से या साम्प्रदायिक कलीसियाओं से? (देखिए 1 कुरिन्थियों 12:24)।
8. एक कलीसिया का पदनाम वैसा ही क्यों होना चाहिए जैसे नये नियम में कलीसिया को दिया गया है?
9. क्या कलीसियाओं को आज नये नियम की रीतियों को अपनाना चाहिए?

शब्द सहायता

उसमें बने रहना – यीशु की शिक्षाओं से प्रेम करना, उनका अध्ययन करना और उनको मानना (यूहन्ना 8:30–32)।

रोटी तोड़ना – प्रभु भोज लेना (देखिए प्रेरितों के काम 2:42; 20:7)।

सेवक (डीकन)– योग्य पुरुष (1 तीमुथियुस 3:8–13) जिन्हें मण्डली की

सेवा के लिए चुना जाता है। वे प्राचीनों के अधीन सेवा करते हैं (फिलिप्पियों 1:1; प्रेरितों के काम 20:28)।

प्राचीन (ऐल्डर) – प्रौढ़ मसीही पुरुष, जिन्हें स्थानीय मण्डलियों की निगरानी के लिए चुना जाता है (1 तीमुथियुस 3:1-7)।

वाद्य-संगीत – मनुष्य के बनाए यन्त्र जैसे कि तार वाले बाजे (सितार, गिटार, वीणा आदि), हवा वाले बाजे (हारमोनियम, बांसुरी आदि), पीतल के बाजे (झांझ आदि), की-बोर्ड वाले बाजे (विद्युत-ऊर्जा आदि से चलने वाले), और तबला आदि। इस प्रकार के संगीत का कलीसिया की आराधना के बारे में नये नियम में कोई उल्लेख नहीं है। परमेश्वर गाने को हमारी सार्वजनिक आराधना का भाग बनाना चाहता है (इब्रानियों 2:12ख; इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। एकान्त में भक्ति में गाने के लिए याकूब 5:13 में उत्साहित किया गया है।

प्रोटैस्टैंट – मनुष्य निर्मित उन धार्मिक समूहों को दिए गए नाम जिनके विश्वास और पद्धति प्रोटैस्टैंट रिफरमेशन के सिद्धांत पर आधारित हैं। इस लहर के नेताओं ने कुछ रोमन पद्धतियों (जैसे पोपों और प्रीस्टों के अधिकार को मान्यता देने) का ''विरोध'' किया। यद्यपि इस लहर ने कुछ गलतियों को रद्द किया परन्तु नये नियम की कलीसिया परमेश्वर के वचन पर आधारित होनी चाहिए – किसी ऐसी प्रतिक्रिया पर नहीं, जिसे कोई और पहले से मान रहा हो।

[1]इन पदों में लूका के द्वारा प्रभु भोज लेने के समय के अन्तर का वर्णन नहीं किया गया, परन्तु वह प्रेरितों 20:7 में अवश्य सूचित करता है कि कलीसिया के द्वारा सप्ताह के हर पहले दिन अर्थात जिस दिन यीशु जी उठा, प्रभु भोज में भाग लिया जाता था।